Approved by Ex. UGC
Journal No. : 63580
Regd. No. 21747

Indexed : IIJIF, I2OR & SJIF
I2OR Impact Factor : 7.680
ISSN 2277-2014

Research Discourse

An International Peer-reviewed Refereed Research Journal

Vol. XV No. II April-June 2025

RESEARCH DISCOURSE
VARANASI

Editor
Anish Kumar Verma

Associate Editors
Rakesh Kumar Maurya
Ziaur Rahman Khan
Romee Maurya
Ramkripal Verma

International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF)

I2OR

SJIFactor
Scientific Journal Impact Factor

Approved by Ex. UGC
Journal No. : 63580
Regd. No. 21747

Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF
I2OR Impact Factor : 7.680
ISSN 2277-2014

Research Discourse

An International Peer-reviewed Refereed Research Journal

Vol. XV **No. II** **April-June 2025**

Editor in Chief
Anish Kumar Verma

Associate Editors

Rakesh Kumar Maurya
Ziaur Rahman Khan
Romee Maurya
Ram Kripal Verma

Published by :
South Asia Research & Development Institute
B. 28/70, Manas Mandir, Durgakund, Varanasi-221005, U.P. (INDIA)
Website : www.researchdiscourse.org
E-mail : researchdiscourse2012@gmail.com
Mobile : 09453025847, 8840080928

Research Discourse
An International Peer-reviewed Refereed Research Journal
Vol. XV, No. II, April-June 2025, (ISSN 2277-2014)

INDEX

आतंकवाद का भीषण दस्तावेज : अग्निशेखर की कविताओं के संदर्भ में 1-2
अनुपमा के एवं प्रो0.(डॉ0)पी.प्रिया
रोजगार का संकट और युवा वर्ग : क्या कर्म का विकल्प नहीं? 3-4
डॉ0 कुमार मधुसूदन राजा
बस्ती जनपद में 1857 ई0 की क्रांति तथा तलाश कुंवरि के नेतृत्व में अमोढ़ा रियासत का प्रतिरोध 5-7
डॉ0 अवधेश कुमार
आसन् ब्राह्मण : ऋषि 8-9
डॉ0 लेखमणी त्रिपाठी
ग्रामीण खेल प्रतिभाओं के विकास में केन्द्र सरकार की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 10-12
कृष्ण कुमार विश्वकर्मा
श्री राघवाभ्युदयम् एकांकी नाटक एवं श्रीराम की गुरुकुल शिक्षा 13-14
अन्जू लता एवं डॉ0 प्रमिला मिश्रा
सिन्धु सभ्यता और वैदिककालीन संस्कृति की असमानताएँ एवं समानताएँ : एक ऐतिहासिक अवलोकन 15-17
डॉ0 ज्ञानेंद्र पाल
काव्यसाहित्यस्य महत्ताविमर्शः 18-20
डॉ0 कमलेशझाः
मुगलकालीन दरबार की संस्कृति 21-23
डॉ0 मारकण्डेय सिंह
डॉ0 रामविलास शर्मा के प्रिय आलोचक और कवि 24-25
डॉ0 संजय कुमार सुमन
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन : सामाजिक, राजनीतिक चेतना का प्रवाह 26-28
देवनन्दन यादव
समकालीन हिन्दी कविता में दलित विमर्श 29-31
डॉ0 पूनम सिंह
21वीं सदी में भारतीय सांस्कृतिक विरासत के महत्त्व का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण 32-34
डॉ0 बबिता
आसियान में भारत की भूमिका 35-37
डॉ0 सत्य प्रकाश सिंह
शैलेश मटियानी के कहानियों में दलित पक्ष की अवधारणा 38-39
डॉ0 लालचन्द विश्वकर्मा
भारतीय जनजाति की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति : मध्य प्रदेश की भारिया जनजाति में देशज औषधीय प्रथाएँ 40-43
डॉ0 रवि भूषण साहु
हिंदी का आदिवासी साहित्य 44-46
मनीष कुमार मिश्रा
राम की पुष्पक विमान यात्रा : पर्यावरणीय यथार्थ 47-48
डॉ0 रंजना त्रिपाठी
भारत की विदेश नीति : रणनीतिक स्वायत्तता और बहुपक्षवाद का नया युग 49-51
सुरभि सिंह
नव लोक प्रबंधन की अवधारणा और बिहार में राजनीतिक विकास : संभावनाएँ और चुनौतियाँ 52-54
डॉ0 शैलेन्द्र कुमार
भारत के प्रमुख जैन साहित्य में रामकथा : एक ऐतिहासिक अवलोकन 55-57
श्याम बाबू एवं डॉ0 सुरभि श्रीवास्तव
सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में भारतीय संविधान की भूमिका 58-59
डॉ0 सत्यनारायण प्रसाद
महिलाओं में अवकाश का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 60-62
डॉ0 अशोक कुमार खोरवाल

नागार्जुन के उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्या 63-65
लता एवं प्रो0 (डॉ0) सुधारानी सिंह (डी0लिट्0)
आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वजमणि उपन्यास का सांस्कृतिक विश्लेषण 66-67
रेनू एवं डॉ0 कुमर पाल
भारतीय ज्ञान परंपरा एवं नई शिक्षा नीति 2020 का समावेशन 68-70
डॉ0 बजरंगी मंडल
हिंद महासागर का भू–राजनीतिक महत्व एवं भारत की नवीन प्रवृत्तियाँ 71-72
डॉ0 स्मिता पाण्डेय
राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में आर्थिक विमर्श : भूमण्डलीकरण एवं बाजारवाद 73-75
डॉ0 अखिलेश कुमार यादव
धर्मवीर भारती कृत *'गुलकी बन्नो'* नारी उत्पीड़न का चरम उत्कर्ष 76-77
मधु रानी
अमरकांत का समय और समाज 78-80
पूनम यादव एवं डॉ0 सुरेन्द्र प्रताप सिंह यादव
श्रीलाल शुक्ल का वैयक्तिक एवं साहित्यिक परिचय 81-83
अरविन्द कुमार सरोज एवं डॉ0 सुरेन्द्र पाण्डेय
बलराम के समीक्षात्मक साहित्य का अध्ययन 84-85
ललिता गुप्ता एवं डॉ0 अशोक गायकवाड
संत कबीर और तुकाराम के काव्य का तुलनीय अध्ययन : (आर्थिक संदर्भ में) 86-87
डॉ0 राम चन्द्र मौर्य
स्वदेशी समुदाय : प्रौद्योगिकी, पर्यटन व पर्यावरण 88-90
मुनिराज
सोशल मीडिया : 21वीं सदी की डिजिटल क्रांति का युग 91-93
डॉ0 नीलम श्रीवास्तव
निर्वाण की समस्या : नकारात्मक या सकारात्मक स्थिति? 94-96
डॉ0 श्रद्धा कुमारी
पर्यावरण से सम्बन्धित अन्तरर्राष्ट्रीय प्रयास 97-98
डॉ0 अवनीश कुमार पाण्डेय
माध्यमिक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के संदर्भ में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन 99-102
सच्चिदा नंद सिंह एवं डॉ0 मोनिका अग्रवाल
मुगलकालीन बिहार की कलात्मक उपलब्धियाँ 103-104
अविनाश कुमार पासवान एवं डॉ0 मो. इस्माईल
ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं पर डिजिटलीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 105-107
रूपम यादव एवं डॉ0 अमरेश कुमार त्रिपाठी
मौर्य एवं गुप्तकालीन भारत में व्यापार और विनिमय तंत्र : साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों का तुलनात्मक अध्ययन 108-111
संदीप कुमार एवं प्रो0 प्रदीप सिंह
मृणाल पाण्डेय के स्त्री–विषयक विचार 112-114
वंदना शुक्ला एवं डॉ0 शिवाजी
उदारीकरण की अवधारणा : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण 115-116
कृष्ण मुरारी लाल एवं डॉ0 गार्गी त्रिपाठी
आदर्श शिक्षक के व्यक्तित्व निर्माण में भगवद्गीता की भूमिका 117-118
डॉ0 अखिलेश कुमार पाण्डेय

Research Discourse (ISSN 2277-2014) : An International Peer-reviewed Refereed Research Journal, Published by : SARDI, Varanasi, U.P. (INDIA)
Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF, IIJ Impact Factor : 7.680, Vol XV, No. II, April-June 2025, Page No. : 91-93
Received- 26/04/2025, Reviewed- 26/05/2025, Accepted- 27/05/2025

सोशल मीडिया : 21वीं सदी की डिजिटल क्रांति का युग

डॉ0 नीलम श्रीवास्तव*

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, डी0वी0एस0 कालेज, गोविन्द नगर, कानपुर, उ0प्र0

सारांश : 21वीं सदी को सोशल मीडिया की डिजिटल क्रांति का युग नाम दे दिया जाये तो अतिश्योक्ति न होगा। सोशल मीडिया इस युग में जान पहचान बढ़ाने और सूचनाओं का चुटकियों में आदान–प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है। इसकी ओर बढ़ती सर्वसाधारण की रूचि को देखा जाय तो सोशल मीडिया रोटी, कपड़ा और मकान के बाद चौथी सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज ज्ञान, बुद्धि, रूचि और वार्तालाप का विकास करने को सबसे अच्छा, सस्ता और टिकाऊ माध्यम है– सोशल मीडिया। आज नई तकनीकों को अपनाना विकास की इस दौड़ में जीतने के लिये उतना ही आवश्यक है जितना हमारे शरीर के लिये श्वास लेना। सोशल मीडिया जन–मानस को विश्व से जोड़ने, संवाद करने और जानकारी साझा करने का एक शक्तिशाली माध्यम है।

आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहाँ सोशल मीडिया की आवश्यकता नहीं। इन आवश्यकताओं को हम किन शब्दों में व्यक्त करें। आज के युग में सोशल मीडिया के बगैर मूलभूत आवश्यकताओं का संचालन सर्वथा दुर्लभ हो गया है। क्षेत्रीय विकास, सामाजिक विकास के साथ देश के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना आज सोशल मीडिया के अभाव में अधूरी है। शिक्षा का क्षेत्र हो या विज्ञान, गणित या वैज्ञानिक शोध, राजनीति या देश संचालन के लिये बनने वाली नीतियाँ, उद्योग जगत से जुड़ी नीतियाँ या व्यापार संचालन के तौर–तरीके, प्रत्येक क्षेत्र में सोशल मीडिया का अधिकाधिक प्रयोग हो रहा है। निःसंदेह 21वीं सदी को सोशल मीडिया की डिजिटल क्रांति का युग कहा जा सकता है।

मुख्य शब्द : सोशल मीडिया, डिजिटल क्रांति, इंटरनेट, डाटा, साइबर क्राइम, सोशल नेटवर्किंग आदि।

प्रस्तावना : प्राचीन काल में जब हमारे पास साधनों का अभाव था तब किसी भी सूचना को पहुँचाने में कई महीनों का समय लगता था। लेकिन आज टेक्नोलॉजी के इस युग में हम शीघ्रताशीघ्र किसी भी व्यक्ति के पास अपनी सूचनाओं का आदान–प्रदान कर सकते हैं। घर बैठे किसी भी जगह को लाइव देख सकते हैं। आज हम यदि इसको सकारात्मक ढंग से टेक्नोलॉजी के रूप में इस्तेमाल करें, तो हमारे लिये यह आज के युग का रामबाण है। जिससे कार्य और जीवन दोनों ही बड़े सरल और सुगम हो गए हैं। सूचना, डाक्यूमेंटेस, फोटो, वीडियो आदि से जुड़ी हर खबरों के संचार के लिये सोशल मीडिया सबसे बेहतरीन उपाय है। हर एक व्यक्ति जो कुछ सीखना चाहता है उसके लिये सोशल मीडिया किसी वरदान से कम नहीं।

शिक्षा के क्षेत्र में इसी सीखने–सिखाये को सुलभ बनाया है। जहाँ शिक्षक और छात्र विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं और विभिन्न शैक्षिक संसाधनों का प्रयोग भी सरलता से कर सकते हैं। सोशल मीडिया व्यवसायों और गैर सरकारी संगठनों के लिये अपने उत्पादों, सेवाओं और अभियानों को बढ़ावा देने का एक प्रभावी मंच है जिससे उन्हें व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचने में मदद मिलती है। सोशल मीडिया ने लोगों को अपने विचारों को साझा करने और महत्वपूर्ण सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाने का एक मंच प्रदान किया है। यह ज्ञान और सूचना के प्रचार–प्रसार के पारम्परिक माध्यमों को चुनौती देता है जिसके फलस्वरूप सामान्यजन, मात्र उपभोक्ता ही नहीं अपितु सामग्री निर्माता भी प्रचारक बन गए है। कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में सोशल मीडिया समाज के लिये अपार अवसर प्रदान करता है। आज सोशल मीडिया सामाजिक प्रतिष्ठा का भी मापदंड बन गया है। जिस यूजर के जितने अधिक मित्र, अनुसरणकर्ता (फालोवर) व उसके द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर साझा की गयी विषयवस्तु को लोगों द्वारा पसंद किये जाने वालों की संख्या) इत्यादि उसकी प्रतिष्ठा का (लाइक) मापदंड माने जाते है। सोशल मीडिया ने विचारों की अभिव्यक्ति में समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को चाहे वह किसान हो, मजदूर हो, कम पढ़ा लिखा हो, पुरूष हो, स्त्री हो, वयस्क हो या अवयस्क इत्यादि सबकी सहभागिता को सुनिश्चित किया है।

अध्ययन का उद्देश्य : 1. 21वीं सदी में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन। 2. सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध हेतु अवलोकन विधि के साथ–साथ वर्णानात्मक विधि का भी आश्रय लिया गया है।

सोशल मीडिया क्या है : सोशल मीडिया एक प्रकार का जनसंचार माध्यमों पर संचार इंटरनेट है (जैसे–सामाजिक नेटवर्किंग और माइक्रो ब्लागिंग के लिये वेबसाइट) जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता जानकारी, विचार, व्यक्तिगत संदेश और अन्य विषय सामग्री जैसे–वीडियो इत्यादि साझा करते हैं। इसके माध्यम से जानकारी प्राप्त करना, जानकारी देना और संवाद करना सामान्यतः सरल और सुविधाजनक होता है।

परिभाषा : सोशल मीडिया डिजिटल संचार का एक रूप है जो उपयोगकर्ताओं को सामाजीकरण, सूचना साझा करने और उपयोगकर्ताओं द्वारा निर्मित सामग्री को पोस्ट करने के लिये ऑनलाइन नेटवर्क और समुदाय बनाने की अनुमति देता है।

2024 तक सोशल मीडिया के वैश्विक उपयोगकर्ता पाँच अरब से ज्यादा थे जो दुनियाँ की 62% से ज्यादा आबादी के बराबर है। इसमें मैसेजिंग और चैट के लिये डिजाइन किये गये एप या वेबसाइट, सोशल प्लेटफार्म जैसे–(फेसबुक, इंस्टाग्राम) और सामुदायिक फोरम जैसे–रेडिट डिस्कार्ड शामिल है। जैसे–2 उपयोगकर्ता सोशल मीडिया साइटों पर अधिक समय व्यतीत करने लगे, विभिन्न प्रकार के आवश्यकतानुसार सोशल मीडिया प्लेटफार्म विकसित हुए, इन्हें सामान्यतः निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं–

1. सामजिक नेटवर्क	फेसबुक, नेक्स्टडोर
2. माइक्रो ब्लागिंग	ब्लूस्काई, मैस्टोडॉन, थ्रेडस
3. दीर्घ–फार्म ब्लागिंग	सबस्टैक, घोस्ट
4. व्यावसयिक नेटवर्किंग	लिंक्डइन, रिसर्चगेट
5. वीडियो, फोटो साझा	इंस्टाग्राम, यूट्यूब, स्नैपचैट
6. विजुअल क्यूरेशन और खोज	पिनटरेस्ट

7. संदेश	व्हाट्सएप, सिग्नल वीचैट
8. सामुदायिक फोरम	रेडिट डिस्कॉर्ड, क्लब हाउस

उपरोक्त प्लेटफार्म अलग–अलग उपयोगों और उपयोगकर्ताओं के लिये होते हैं।

सोशल मीडिया के सकारात्मक पक्ष : तेजतर्रार डिजिटल युग में सोशल मीडिया हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, जो एक दूसरे से जुड़ने संवाद करने और सूचना प्राप्त करने के तरीके को आकार दे रही है। वैश्विक सम्पर्क को बढ़ावा देने से लेकर निजता की चुनौतियों तक सोशल मीडिया का परिदृश्य अत्यन्त विविध है। आज सोशल मीडिया ने संचार, वैश्विक सम्पर्क, ब्रांड प्रबंधन, दर्शकों की सहभागिता, ऑनलाइन उपस्थिति, व्यावसायिक विस्तार आदि में क्रांति ला दी है। इस डिजिटल युग में सोशल मीडिया के सकारात्मक पक्ष निर्विवाद है जो हमारे जीवन के विविध पहलुओं पर प्रभाव डालते हैं। वैश्विक सम्पर्क को बढ़ावा देने से लेकर एक शक्तिशाली मार्केटिंग टूल के रूप में काम करने तक सोशल मीडिया भौगोलिक सीमाओं को पार कर लोगों, को एक साथ एकत्रित करता है और हमारे संवाद करने के तरीके को नया रूप देता है। सोशल मीडिया के कुछ सकारात्मक पक्ष निम्न है– एक दूसरे से जुड़े रहना, समाचार और वर्तमान घटनाओं तक पहुँच, व्यक्तिगत ब्रांडिग के लिये मंच सुविधा और पहुँच में आसानी, नवाचार और सीखने–सिखाने को बढ़ावा, मनोरंजन प्रदान करना, सामाजिक परिवर्तन का मंच, कौशल विकास को बढ़ावा, शिक्षा का अनुपरक।

स्पष्ट है कि सोशल मीडिया इस 21वीं सदी में अपनी सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के माध्यम से ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए हैं, जिनसे लोकतंत्र को समृद्ध बनाया जा सका है। जिससे किसी भी देश की एकता, भूखण्डता पंथनिरपेक्षता, और समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि हुई है। लोकप्रियता से प्रसार में भी सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफार्म है जहाँ व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को लोकप्रिय बना सकता है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक पक्ष : जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते है ठीक उसी प्रकार सोशल मीडिया का दूसरा पहलू भी है और वह है उसका नकारात्मक पक्ष। नकारात्मक पक्ष के अर्न्तगत सोशल मीडिया अनेक गंभीर जोखिमों को भी प्रस्तुत करता है जैसे–ध्यान भटकाना, उत्पादकता में कमी, गलत सूचना का प्रसार, गोपनीयता और डाटा कमजोरियों से समझौता, नकली सम्बन्धों का बढ़ावा, धमकी एवं उत्पीड़न को बढ़ावा, अवसाद और चिंता का कारण, जूनूनी आत्मप्रस्तुति को बढ़ावा, घोटाले और धोखाधड़ी फैलाने में मदद।

सोशल मीडिया का प्रयोग कम्प्यूटर, लैपटॉप इत्यादि अनेक साधनों से किया जा सकता है। सोशल मीडिया द्वारा कुछ ही पलों में छोटी से छोटी व झूठी खबरों को भी आसानी से फैलाया जा सकता है। कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया एक ऐसा ताकतवर साधन है जिसके द्वारा लोगों को विचार विमर्श का अवसर तो मिलता है साथ ही साथ किसी के लिये अनुचित अफवाहों को फैलाकर उसका जीवन भी समाप्त किया जा सकता है।

सोशल मीडिया के दोनों पक्षों के अवलोकन आधार पर यह स्पष्ट है कि यह आधुनिक डिजिटल समाज के ताने–बाने में गहराई से समा गया है। यह सामाजिक आंदोलनों, सामुदायिक निर्माण और वैश्विक जागरूकता के लिये एक मंच के रूप में कार्यरत है लेकिन यह सोशल मीडिया मानव स्वभाव का एक काला पहलू भी उजागर करता है। यह सोशल मीडिया नहीं, जो अंधेरा फैलाता है बल्कि उसके उपयोगकर्ता है जिनकी मानसिकता निम्न श्रेणी की है। सामान्यतः सोशल मीडिया उन समस्याओं को उजागर करता है जिसका समाधान मानवता को करना है और साथ ही उन सुखों को भी उजागर करता है जिनका आनन्द लेना है।

निष्कर्ष : वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता समाज का एक अहम पहलू है। इस अधिकार के उपयोग के लिये सोशल मीडिया ने जो अवसर नागरिकों को प्रदान किये है। एक दशक पूर्व इसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। वास्तविकता तो यह है कि इस मंच के जरिये समाज में हर क्षेत्र में बदलाव की बयार लाई जा सकती है, आवश्यकता है इस सोशल मीडिया के समुचित उपयोग की जिससे मानवाधिकारों के मूल्यों का हनन न हो।

सोशल मीडिया ने जहाँ एक तरफ मानव विकास के कई नये द्वारा खोले हैं वहीं दूसरी ओर मानव के जीवन में अनेक चुनौतियों को भी जन्म दिया है, सोशल मीडिया मानव विकास का एक अच्छा मॉडल हो सकता है बशर्ते इसका उपयोग सही तरीके से सूझ–बूझ के साथ सावधानी से किया जाये।

सोशल मीडिया एक तरफ संचार, शिक्षा और सामाजिक जुड़ाव का शक्तिशाली माध्यम है जो हमें दूर रहने वालों से जोड़ता है और जानकारी तक पहुँच प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर इसकी लत मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं जैसे–अवसाद, चिंता, गलत सूचना का प्रसार एवं गोपनीय उल्लघनों का कारण बन सकता है। इसका प्रभाव काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि इसका उपयोग कितनी समझदारी एवं जिम्मेदारी से किया गया। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आज आवश्यकता है सोशल मीडिया के प्रयोग के तरीकों के प्रति जागरूकता फैलाने की जिससे आतंकवाद, अश्लीलता, धोखाधड़ी और साइबर क्राइम जैसे अनेक नकारात्मक पहलुओं को नियंत्रित किया जा सके और यह दावे के साथ कहा जा सके कि "सोशल मीडिया 21वीं सदी की डिजिटल क्रांति का युग है।"

निःसंदेह, आज आवश्यकता है निजता के अधिकार का उल्लंघन किये बिना सोशल मीडिया के दुरूपयोग को रोकने के लिये सभी पक्षों के साथ विचार विमर्श का नए विकल्पों की खोज की जाए ताकि भविष्य में इसके दुष्प्रभावों से बचा जा सके।

सन्दर्भ :

1. वर्मा, शशि, (2019), मानवाधिकार संरक्षण में मीडिया की भूमिका, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वाल्यूम 5, अंक–2, मार्च, पृ0 21–23
2. प्रताप, रवीन्द्र, (2014), आम आदमी की नई ताकत बना सोशल मीडिया, (पत्रिका ए टू जेड लाइन) जन संदेश टाइम्स, अंक 5
3. Shukla, Rishi and Dr. Vivek Agarwal "Social Media Marketing", Internatoinal Journal of Research Publication and Review 5, no4, 89 , P. 49-53
4. सक्सेना, अम्बरीष (2015) मीडिया की नई चुनौतियां,प्रथम संस्करण. 95 कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली
5. Sharma.V. (2020) Media Achivers, Harshlocak Publication, Jaipur.

6. यादव, अनुपमा (2011), बदशक्ल होते लोकतंत्र को सशक्त बनाता मीडिया, महिला विधि भारती, विधि चेतना की द्विभाषिक शोध पत्रिका, अप्रैल–जून, अंक 67, पृ0 196–198.
7. रामशंकर, (2018) शोध अनुसंधान समाचार, शोध आलेख, अभिव्यक्ति का वैकल्पिक मंच सोशल मीडिया : चुनौतियॉ एवं सम्भावनाएँ
8. Huskem.y. (2015) The Impact of Social Media on the academic achivemenet on secondary level school students. international journal of bussiness administration, 6 (1), P. 46-52
9. जायसवाल, सुधा, भूमण्डलीकरण के दौर में मीडिया और मानवाधिकार, पृष्ठ 104, सिंह नीलिमा, भूमण्डलीकरण और भारत में मानवाधिकार, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, नई दिल्ली
10. Journalism in India. Sage Publications, NewDelhi,
11. https://www.theindiaforum.in/article/howindia's media landscape changed over five years.